62

''हे परमेश्वर, दया कर!''

लूका 18:9-14, एक निकट दृष्टि

बाइबल स्कूल की एक शिक्षिका ने अपने छोटे छात्रों को फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत पढ़ाया:[1]

> और [यीशु] ने कितनों को, जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टांत कहा कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला। फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करने वाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेने वाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी कमाई का दसवां अंश भी देता हूं। परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा (लूका 18:9-14)।

उस शिक्षिका ने फरीसी वाले घमण्ड से बचने और चुंगी लेने वाले की दीनता अपनाने की आवश्यकता को समझाया। समाप्ति पर, उसने बच्चों के साथ प्रार्थना की: ''हे प्रभु, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि हम उस फरीसी की तरह नहीं हैं।...'' जब कोई सही काम करने की कोशिश कर रहा होता है, तो उसे गलती करने का खतरा बना रहता है, जो फरीसी ने की थी।

हम में से कइयों ने बचपन से फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत सुना है, फिर भी हमें आज भी इसकी सच्चाइयां याद रखने की आवश्यकता है। हो सकता है कि इस कहानी में पाई जाने वाली एक या दो शिक्षाओं से हम अनजान हों। फिर भी हम लूका 18:9-14 का अध्ययन करते हुए चुनौती लेने को तैयार रहें।

दो व्यक्तित्व

यीशु के दृष्टांतों का उद्देश्य हमेशा स्पष्ट नहीं होता, पर इस बार, यह वचन में स्पष्ट है: ''उस ने कितनों को जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टांत कहा'' (आयत 9)। मसीह ने अन्त में अपने सार के साथ इस लक्ष्य पर दोबारा ज़ोर दिया: ''क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (आयत 14ख)।[2]

ऐसे व्यक्ति के उदाहरण के लिए जो अपने आप को ऊंचा बनाता था, यीशु ने एक फरीसी का इस्तेमाल किया। दीनता के एक उदाहरण के लिए, उसने एक चुंगी लेने वाले का इस्तेमाल किया। दोनों को शायद इसलिए चुना गया, क्योंकि वे यहूदी समाज में दो अलग-अलग चरमों का प्रतिनिधित्व करते थे: फरीसी नैतिक, धार्मिक और सामाजिक सीढ़ी के सबसे ऊपर के डण्डे पर था, जबकि चुंगी लेने वाला सबसे नीचे वाले पर।[3] इस दृष्टांत से अधिक से अधिक प्रभाव लेने के लिए, हमें इन दोनों के बारे में कुछ पता होना आवश्यक है।

व्यक्तित्व नम्बर 1: फरीसी

आरम्भ से ही शुरू करते हैं। दृष्टांत के आरम्भिक शब्द हैं, ''दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गए'' (आयत 10क)। परमेश्वर की इच्छा थी कि मन्दिर ''प्रार्थना का घर'' (लूका 19:46) कहलाए।[4] यहूदी व स्त्रियां प्रार्थना करने के लिए दिन में कम से कम तीन बार मन्दिर में इकट्ठे होते थे।[5] इनमें से दो समयों में बलिदान किए जाते थे। पुरुष और स्त्रियां सभी प्रार्थना करने के लिए स्त्रियों के आंगन में इकट्ठे होते थे; पर पुरुष चाहते तो इस्राएल के आंगन में जा सकते थे और इस प्रकार वे मेल बलियों की वेदी के निकट जा सकते थे। यह सुनना आश्चर्य की बात नहीं है कि ''दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गए।''

इन दोनों में से ''एक फरीसी'' था (आयत 10ख)। पुन:, यह जानना आश्चर्य की बात नहीं है कि एक फरीसी प्रार्थना करने के लिए मन्दिर में गया। फरीसी धार्मिक संस्कारों के प्रति बहुत ही सजग होते थे।

सुसमाचार के वृत्तांतों से परिचित लोग जानते हैं कि उन विवरणों में मुख्य खलनायक थे।[6] परन्तु इस दृष्टांत को पूरी तरह से समझने के लिए, हमें यह समझना आवश्यक है कि यहूदी लोग फरीसियों को, उसके जो अच्छा, उचित और सम्माननीय था, के रखवालों के रूप में देखते थे। वे परमेश्वर की सेवा करने और जिसे ''पवित्र परम्पराएं'' माना जाता था, की सम्भाल करने में गम्भीर थे। ऐसे संसार में जहां पुराने ढंग उतने पवित्र नहीं थे जितने अतीत में थे, फरीसी लोग स्थिरता के बुर्जों की तरह खड़े थे।

11 और 12 आयतों में फरीसी के अपने अवलोकन पर संदेह करने का हमारे पास कोई कारण नहीं है। यह मानकर कि वह सही था, उसके उच्च नैतिक सिद्धांत थे: वह धोखेबाज नहीं था; वह अपने कारोबार में हेराफेरी नहीं करता था। वह अधर्मी नहीं था; वह दूसरों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करता था।[7] वह व्यभिचारी नहीं था; वह विवाह की अपनी

प्रतिज्ञाओं में कायम था। इसके अलावा, वह परमेश्वर की व्यवस्था को मानने में विश्वास रखता था। वास्तव में वह व्यवस्था की मांगों से आगे बढ़ने की कोशिश करता था:[8] व्यवस्था में वर्ष में एक दिन का उपवास–अर्थात प्रायश्चित के दिन का उपवास बताया गया था (लैव्यव्यवस्था 16:29, 30[9]); परन्तु यह फरीसी प्रत्येक वर्ष 104 बार उपवास रखता था (प्रत्येक सोमवार और गुरुवार[10]; देखें मत्ती 6:16)। पुन: व्यवस्था में आज्ञा थी कि अनाज, दाखमधु, और पशुओं का दसमांश (10 प्रतिशत) दिया जाए (देखें व्यवस्थाविवरण 14:22, 23); परन्तु फरीसी लोग जो कुछ उनके पास था, उस *सब* का दसमांश देते थे, यहां तक कि वाटिका के छोटे से छोटे पौधे का भी (देखें मत्ती 23:23)।

किसी फरीसी का पड़ोसी होने पर आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। वह एक अच्छा नागरिक, प्रतिष्ठित व्यक्ति, परिवार वाला आदमी और मजबूत धार्मिक मान्यताओं वाला व्यक्ति होता था। यदि आप उसे मन्दिर में देखते और पूछते कि वह वहां क्यों आया है, तो कोई संदेह नहीं कि वह चकित होकर कहता, ''मुझे और कहां होना चाहिए था?'' आज हम ऐसे व्यक्ति के बारे में कह सकते हैं, ''जब भी दरवाज़ा खुलता है, वह वहीं होता है।'' पुन: मैं कहता हूं कि यह जानकर हैरान होने वाली कोई बात नहीं है कि फरीसी मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गया था।

व्यक्तित्व नम्बर 2: चुंगी लेने वाला

दूसरी ओर, यह जानकर आश्चर्य होता है कि एक चुंगी लेने वाला प्रार्थना करने के लिए मन्दिर में गया। यदि कोई व्यक्ति, जिसकी आप मन्दिर में होने की उम्मीद *नहीं* करेंगे तो वह चुंगी लेने वाला ही होगा।

''चुंगी लेने वाला'' शब्द आज की प्रचलित शब्दावली से थोड़ा हटकर है।[11] आधुनिक अनुवादकों ने इसे ''कर एकत्र करने वाला'' और ''टैक्स लेने वाला'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर सुधारने का प्रयास किया है। ये शब्द उन देशों में अच्छी तरह समझ आ सकते हैं, जहां सरकारी भ्रष्टाचार व्याप्त है और जहां घूस सरकारी अधिकारियों के काम का एक अंग मानी जाती है। इसके साथ, हो सकता है कि इससे कर एकत्र करने वालों के बारे में गलत प्रभाव जाए। चुंगी लेने वालों/कर एकत्र करने वालों के बारे में एक दो बातें कहना ठीक रहेगा।

रोम में कर एकत्र करने का विचित्र ढंग था। आम तौर पर, अधिकारी लोग किसी विशेष क्षेत्र में निर्धारित राशि का अनुमान लगाते और फिर सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को कर एकत्र करने का अधिकार देते थे। निर्धारित की गई राशि रोम को देने वाले ठेकेदार को शेष राशि अपने पास रखने की छूट होती थी। क्योंकि पहले समाचार पत्र, रेडियो या टीवी पर जानकारी देने का कोई साधन नहीं था, इसलिए कुछ लोगों को ही पता होता था कि उन्हें कितना देने के लिए कहा गया है। इससे कर एकत्र करने वाला काफ़ी लाभ उठा सकता था।[12]

यह ऐसा प्रबन्ध था, जिसका दुरुपयोग आसानी से हो सकता था। सैकड़ों तरह से

लालची कर एकत्र करने वाला लोगों को धोखा दे सकता था। ''भूमि कर था। ... मत कर था और निजी सम्पत्ति पर भी कर था। ... निर्यात और आयात शुल्क थे, बन्दरगाहों, सड़कों, पुलों और नगर के फाटकों और अन्य स्थानों पर महसूल लिए जाते थे।''[13]

यहूदियों की दृष्टि में, जब उनका कोई देशवासी चुंगी लेने वाला या कर एकत्र करने वाला बन जाता था, तो उसे देशद्रोही[14] और चोर समझा जाता था। लूका 18 में चुंगी लेने वाले को ''पापी'' (आयत 13) कहा गया है और कोई भी उसके साथ बहस नहीं करता होगा (देखें लूका 19:5-7)। चुंगी लेने वाले को समाज की गन्दगी माना जाता था और सम्मानित लोगों द्वारा उससे परहेज रखा जाता था।[15] साधारणतया, अपने पड़ोसी के रूप में आप ऐसे व्यक्ति को *नहीं* चाहेंगे। तौ भी, कितनी हैरानी की बात है कि एक चुंगी लेने वाला प्रार्थना के लिए मन्दिर में गया।

हम नहीं जानते कि यह आदमी मन्दिर में कैसे आ गया। मेरे विचार से यह कहकर हम सुरक्षित होंगे कि वह आदत के अनुसार मन्दिर में नहीं गया था। अभक्तिपूर्ण जीवन शैली वाले लोग आराधनालओं में जाना अपनी आदत नहीं बनाते; आराधनाओं में जाने से उन्हें बेचैनी होती है। फिर भी इस व्यक्ति में कुछ ऐसी बात थी कि उसे अपनी पापपूर्ण स्थिति का और अपने लिए परमेश्वर की आवश्यकता का पता था। हो सकता है कि उस के जीवन में कोई त्रासदी आई हो: शायद उसका स्वास्थ्य गिर गया था, शायद उसके किसी प्रिय की मृत्यु हो गई थी और अचानक उसे अहसास हुआ कि धन कमाना ही जीवन का उद्देश्य नहीं है। शायद अपने जीवन की समीक्षा करते हुए उसने लम्बी, काली, शीत रात जागकर बिताई थी और जो कुछ उसने देखा, वह उसे अच्छा नहीं लगा था। जो भी कारण रहा हो, समाज से निकाला हुआ यह व्यक्ति प्रार्थना करने के लिए मन्दिर में गया।

दो प्रार्थनाएं

दृश्य की कल्पना करें।

> [पहले, फरीसी आता है] प्रार्थना के संक्षिप्त समय में। वह बड़ी शान से [मन्दिर की] सीढ़ियों की सफ़ाई करता है, सब उसे देख रहे हैं। वह इस्राएलियों के आंगन में प्रवेश करता है और मेल बलि की वेदी के पास चला जाता है। वह तन कर खड़ा होता अपने चौड़े ताबीज़ दिखाता है, लोगों की ओर देखता है, और कुछ प्रसिद्ध बातें दोहराने के लिए [तैयार होता है]।[16]

फिर चुंगी लेने वाला आता है, जो कोशिश कर रहा है कि कहीं कोई उसे देख न ले। भीड़ में से निकलते हुए, लोग उसे धकेल रहे हैं। लोगों की आंखें चमकतीं और मुट्ठियां कस जाती हैं।[17] मैं कानाफूसी करने वालों को भी सुन सकता हूं: ''*वह* यहां क्या कर रहा है?'' वह आदमी एकांत जगह ढूंढ़ता है, आंखें झुका लेता है और प्रार्थना करने लगता है।

प्रार्थना नम्बर 1: फरीसी

दृश्य को मन में रखते हुए, आइए पहले आदमी की यीशु की व्याख्या की समीक्षा करते हैं: ''फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा'' (लूका 18:11क)। इस तथ्य का कोई महत्व नहीं है कि वह खड़ा होकर प्रार्थना कर रहा था, क्योंकि यह प्रार्थना करने की एक सामान्य मुद्रा थी और है (1 राजा 8:22; मरकुस 11:25)। वह वहां खड़ा हुआ, जहां सब लोग उसे देख सकते हों (देखें मत्ती 6:5)।

परन्तु ''अपने मन में'' शब्दों का महत्व है। इन शब्दों का अर्थ हो सकता है कि उसने चुपके से प्रार्थना की, पर फरीसी लोगों की ऐसी पहचान नहीं थी। उन्हें ''बहुत बोलना, जिससे लोगों को सुनाई दे'' अच्छा लगता था (मत्ती 6:7[18])। ''अपने मन में'' वाक्यांश से यह संकेत मिल सकता है कि प्रार्थना बेशक परमेश्वर से की गई थी, पर वास्तव में यह अपने आप से ही थी।

प्रार्थना का आरम्भ सही था, ''हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं'' (लूका 18:11ख)। इसमें परमेश्वर को माना गया और उसका धन्यवाद किया गया (मत्ती 6:9; फिलिप्पियों 4:6)। यदि फरीसी वहीं बस कर देता, तो वह ''धर्मी ठहराया जाकर'' (लूका 18:14) अपने घर लौट गया होता, पर उसने प्रार्थना करना जारी रखा।

''हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं और मनुष्यों की नाईं'' नहीं हूं (आयत 11ख, ग)। यह सही था क्योंकि उसकी जीवन शैली आम लोगों से अच्छी थी और वह संसार को यही बताना भी चाहता था। उसने उन लोगों की किस्में बताईं, जो उसके मन में थीं: ''अन्धेर करने वाले, अन्यायी और व्यभिचारी'' (आयत 11घ)। फिर उसने चारों ओर देखा। दूर तक, उसे चुंगी लेने वाला ही दिखाई दिया। मुझे नहीं मालूम कि उसे कैसे पता था कि वह चुंगी लेने वाला ही था। चुंगी लेने वाले ने वर्दी नहीं पहनी होगी या ऐसी कोई पट्टी नहीं लगाई होगी, जिस पर लिखा हो कि ''मैं चुंगी लेने वाला हूं।'' अधिक सम्भावना यही है कि फरीसी ने उसे पहचान लिया होगा कि कुछ समय पहले उसने उससे अधिक पैसे वसूल किए थे। फरीसी ने यह कहते हुए कि ''और न इस चुंगी लेने वाले के समान हूं'' (आयत 11ङ) दूसरे आदमी[19] की ओर देखते हुए अपनी भौहें चढ़ाई होंगी।

उसने अपने साथी फरीसियों की ओर जो उसी क्षेत्र में खड़े होंगे, या दूसरे लोगों की ओर इशारा नहीं किया होगा, जो मन्दिर में आते रहते थे, बल्कि एक चुंगी लेने वाले पर ही उंगली उठाई जो ''दूर खड़ा था'' (आयत 13)। जो अपने आप को अच्छा दिखाना चाहते हैं, वे अपनी तुलना सबसे दुष्ट व्यक्ति से करते हैं न कि सबसे अच्छे से। ग्लैन पेस ने कहा है, ''यदि आप इतने कठोर लगते हैं, तो आपको तुलना के लिए नैतिक बौने मिल ही जाएंगे।''[20]

यह बताने के बाद कि वह क्या-क्या *नहीं* करता था, उस फरीसी ने बताया कि वह क्या *करता* था: ''मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं'' (आयत 12)। उसने और भी अच्छाइयां गिनाई होंगी। इन शब्दों में जिस काल का उसने इस्तेमाल किया, उसके अनुवाद ''और प्रार्थना करने लगा'' (आयत 11)

से संकेत मिलता है कि वह ऐसे प्रार्थना करता रहा। फरीसियों को ''देर तक प्रार्थना'' करना अच्छा लगता था (लूका 20:47)।

आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि यीशु के सुनने वालों ने फरीसी की प्रार्थना में कोई बुराई नहीं देखी होगी। पहली बात तो यह कि जो कुछ उसने कहा, वह सच था। मेरा कोई मित्र जब अपनी प्राप्तियों के बारे में बताता है, तो वह कहता है, ''कोई शेखी नहीं मार रहा, मैं सच कह रहा हूं।'' दूसरी बात परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए कि वे दूसरों की तरह नहीं है, प्रार्थनाओं की यहूदी शैली थी। ''यहूदी पुरुष प्रतिदिन परमेश्वर का धन्यवाद करता था कि उसे अन्यजाति, दास या स्त्री नहीं बनाया गया।''[21]

फरीसी की प्रार्थना में गलत क्या *था?* उस बात से आरम्भ करके, जिसमें प्रार्थना करने के लिए यह व्यक्ति *असफल* रहा था, हम कई कमियां गिना सकते हैं। उसने परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा याचना नहीं की थी। उसने ईश्वरीय सामर्थ तथा अगुआई के लिए विनती नहीं की थी। उसने कमरे के दूसरी ओर बेचारे पापी की सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना नहीं की थी। परन्तु यीशु ने यह कहानी दो विशेष दोषों को दिखाने के लिए सुनाई थी: उसका उद्देश्य उन लोगों को सामने लाना था, जो (1) ''अपने ऊपर भरोसा रखते थे कि हम धर्मी हैं'' और (2) ''औरों को तुच्छ जानते थे'' (18:9)।

पहले तो, वह फरीसी ''अपने ऊपर भरोसा रखता था।'' यद्यपि उसने प्रार्थना के आरम्भ में परमेश्वर को माना, परन्तु उसने प्रभु में कोई भरोसा नहीं दिखाया, केवल अपने ऊपर ही दिखाया। उसने अपने आप को ही ऊंचा उठाया (आयत 14)।

परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की निष्कपट इच्छा होने में कोई बुराई नहीं है (लूका 6:46)। फरीसी द्वारा उपवास करके और जीरे का दसमांश देकर आत्मिक रूप में ''दो मील जाने''[22] की कोशिश करने में भी कोई बुराई नहीं थी (मत्ती 23:23)। पर व्यक्ति के लिए यह सोचना कि उसके कामों से परमेश्वर को नीचा दिखाया जा सकता है, गलत है। पिछले एक पाठ से ली गई आयत को याद रखें: ''इसी रीति से, तुम भी जब सब कामों को कर चुको, जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था, वही किया है'' (लूका 17:10)। यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, तो हम अपने आप में भरोसा नहीं रख सकते; हमारा भरोसा प्रभु में होना आवश्यक है (नीतिवचन 3:5)।

फरीसी की प्रार्थना में दूसरा बड़ा दोष यह है कि उसने ''दूसरों को तुच्छ जाना'' (लूका 18:9)। उसने कहा, ''हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं और मनुष्यों की नाईं नहीं'' (आयत 11)। मेरी ग्रीक इंटरलीनियर बाइबल के अनुसार, उसने मूलत: कहा, ''मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं दूसरे लोगों की तरह नहीं हूं।'' अन्य शब्दों में, ''मैं और मेरे साथी फरीसी हैं–और फिर [मैं उसके ऊपरी होंठ के थोड़ा सा मुड़ने की कल्पना करता हूं] यही हैं।''

हम इस फरीसी के दूसरे लोगों से उच्च नैतिक मापदण्ड की बात मान सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने व्यवस्था की बातों को पूरा करने के लिए दूसरों से अधिक परिश्रम किया होगा। तौ भी, प्रभु की तुलना में, जिससे वह प्रार्थना कर रहा था, वह शून्य था।

''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं'' (रोमियों 3:10)।

एक उदाहरण ध्यान में आ रहा है: हमारे यहां, लाल चींटियां बहुतायत में पाई जाती हैं। कुछ लाल चींटियां चौथाई इंच लम्बी होती हैं।[23] फिर वे हैं जिन्हें मेरी पत्नी ''चीनी वाली चींटियां'' कहती है। छोटी काली चींटियां जो एक इंच के आठवें भाग से भी छोटी होती हैं, जो कभी-कभी भोजन की तलाश में घर पर हमला कर देती हैं।[24] एक लाल चींटी और साधारण चींटी के सड़क के किनारे खड़े होने की कल्पना करें। कल्पना करें कि लाल चींटी अपना एंटीना उठाती है और कहती है (इसके लिए बहुत कल्पना की आवश्यकता है): ''प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करती हूं कि मैं दूसरी चींटियों की तरह नहीं हूं-उस छोटी चीनी वाली चींटी की तरह भी नहीं, जो वहां है। मैं बड़ी और मजबूत और बहुत सुन्दर हूं।'' उस लाल चींटी के मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि उधर से एक लड़का सड़क के किनारे-किनारे चलता हुआ आया, उसने लाल चींटी और चीनी वाली चींटी को कुचल दिया। मेरा उदाहरण सरल है: लाल चींटी साधारण चींटी से बड़ी हो सकती है, पर मनुष्य की तुलना में वह छोटी और महत्वहीन है। इसी प्रकार कोई नैतिक और धार्मिक रूप से किसी दूसरे से अच्छा हो सकता है, लेकिन सृष्टि के परमेश्वर के सामने हम सभी ''तुच्छ'' हैं (दानिय्येल 4:35)। इसलिए हम में से किसी के लिए भी ''औरों को तुच्छ जानना'' कितनी मूर्खता है!

प्रार्थना नम्बर 2: चुंगी लेने वाला

यीशु ने फरीसी के घमण्ड और चुंगी लेने वाले की दीनता में अन्तर दिखाया। अपने अयोग्य होने का अहसास करके, वह चुंगी लेने वाला ''दूर खड़ा रहा'' (लूका 18:13क)। उसने प्रार्थना बहुत देर बाद की होगी जबकि मन्दिर में वह इससे भी बहुत पहले आया होगा। उसने ''स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा'' (आयत 13ख) लोग कई बार प्रार्थना करते समय आकाश की ओर देखते थे (भजन संहिता 123:1, 2), परन्तु अपने पाप के बोझ तले, यह चुंगी लेने वाला सिर झुकाए खड़ा था।[25] उसने अपनी छाती भी पीटी (लूका 18:13ग), जो गहरे शोक के एक पूर्व के लोगों की लिए अभिव्यक्ति है (नहूम 2:7; लूका 23:48)।[26] उसे यह भी संदेह होगा कि उसकी प्रार्थना सुनी भी जाएगी या नहीं।

फरीसी की तरह, उसने परमेश्वर को सम्बोधित करके प्रार्थना आरम्भ की और फरीसी की तरह ही उसने प्रार्थना अपने आप से की-पर दोनों की प्रार्थनाएं कितनी अलग थीं! चुंगी लेने वाले की याचना बुरी तरह से छोटी, हमारी भाषा में केवल सात शब्दों में थी:[27] ''हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर!'' (18:13घ)।

फरीसी के उलट चुंगी लेने वाले ने अपनी कोई विशेष बात नहीं बताई, यद्यपि उसमें कोई विशेष बात तो अवश्य होगी। कुछ लोग बुरे ही होते हैं। इसके विपरीत, उसने खुलकर अपने पाप को मान लिया; उसने मान लिया कि वह पापी है।[28] वास्तव में उसने इससे भी अधिक माना कि वह पापी है। हमारी भाषा में, ''हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर'' है। यह चुंगी लेने वाला अपने आप को पाप का सार मान रहा था, जो सब पापियों से बड़ा हो।

उसे पौलुस के साथ अपना सम्बन्ध लगा होगा, जिसने अपने आप को पापियों में ''सबसे बड़ा'' माना (1 तीमुथियुस 1:15)।

उसे इस तथ्य में कोई चैन नहीं मिला कि सब मनुष्य पापी हैं (रोमियों 3:23)। उसने और बुरा पापी ढूंढ़ने का प्रयास नहीं किया, जिससे वह अपने आप की तुलना कर सके। उसने यह भी प्रार्थना नहीं की (जैसा हम कर सकते हैं), ''मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं अपने आप को धर्मी मानने वाले इस फरीसी जैसा नहीं हूं।'' पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होकर, उसने अपने आप को आशाहीन, असहाय और बेकार पाया। यशायाह भविष्यवक्ता ने जब ''प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा,'' तो वह पुकार उठा था, ''हाय! हाय! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठ वाला मनुष्य हूं, और अशुद्ध होंठ वाले मनुष्यों के बीच में रहता हूं'' (यशायाह 6:1, 5)।

चुंगी लेने वाले ने धन, प्रसिद्धि, सफलता, अच्छा स्वास्थ्य या जीवन की आवश्यक वस्तुएं नहीं मांगी थीं, बल्कि उसने दया मांगी थी: ''हे परमेश्वर, दया कर।'' अनुवादित वाक्यांश ''दया कर'' में ''दया'' के लिए सामान्य यूनानी शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है। इसके बजाय, चुंगी लेने वाले ने ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया, जिससे आधुनिक अनुवादक परहेज करते हैं, क्योंकि इसे ''आधुनिक मनुष्य के लिए बाइबल की अपरिचित भाषा'' माना जाता है। उसने शब्द के ऐसे रूप का इस्तेमाल किया, जिसका अनुवाद ''शांत करना'' होता है।[29]

''Propitiate'' एक लातीनी शब्द है, जिसका अर्थ मूलत: ''तुष्ट करना'' है। समय इस शब्द के विस्तृत अध्ययन की अनुमति नहीं देता, पर इसमें प्रायश्चित की बाइबल की अवधारणा मिलती है। अपने स्वभाव से परमेश्वर पाप को सहन नहीं कर सकता (रोमियों 1:18); पाप को दण्ड दिया ही जाना है (रोमियों 6:23क; गलातियों 6:7)। मनुष्य अपने आप में कुछ भी नहीं कर सकता था, जिससे वह परमेश्वर के क्रोध को शांत कर सके (रोमियों 1:18; 3:9, 10; यशायाह 64:6)। परमेश्वर ने पाप के लिए प्रायश्चित करने के लिए बलिदान उपलब्ध करवा दिया। पुराने नियम में, पशुओं के बलिदान किए जाते थे (लैव्यव्यवस्था 1; 3–5; देखें इब्रानियों 9:22)। नये नियम में हमारे पापों के लिए क्रूस पर यीशु का सिद्ध और अन्तिम बलिदान दिया जा चुका है (1 कुरिन्थियों 15:3)।

यह सुझाव दिया गया है कि चुंगी लेने वाले के शब्द उसके मन में इसलिए आए हो सकते हैं, क्योंकि वह उस समय मन्दिर में था, जब लोगों के पापों के लिए किसी पशु का बलिदान किया जा रहा था।[30] जो भी हो, ''शान्त करना'' शब्द के उसके इस्तेमाल से यह पता चलता है कि उसने पाप की ''अत्यधिक पाप'' और क्षमा के लिए अपनी आवश्यकता को पहचान लिया।[31] दोष के भार तले दबे हुए (देखें भजन संहिता 40:12), उसने राहत के लिए पुकारा: ''हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर!'' (लूका 18:13)।

हम में से हर किसी ने पाप किया है और ''परमेश्वर की महिमा'' से रह गए हैं (रोमियों 3:23)। ''यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है'' (1 यूहन्ना 1:10)। हम सभी मृत्यु के यानी परमेश्वर से

अनन्तकाल के लिए दूर होने के अधिकारी हैं (रोमियों 6:23क; प्रकाशितवाक्य 20:14)। परमेश्वर की पवित्रता की फ्लडलाइट में अपने पापों के सामने आने से, हम सब दया के लिए पुकार सकते हैं: ''हे परमेश्वर हम पापियों पर दया कर।''

दो सद्भावनाएं

समाप्त करते हुए यीशु ने अधिकार के साथ बात की: ''मैं तुम से कहता हूं'' (लूका 18:14क)। यानी ''मैं तुम से कहता हूं क्योंकि मैं लोगों के मनों को देख सकता हूं। मैं तुम से कहता हूं क्योंकि मैं परमेश्वर के मन को जानता हूं।''

सम्भावना नम्बर 1: फरीसी

मसीह ने पहले फरीसी को समाज के दृष्टिकोण से सबसे योग्य व्यक्ति के रूप में दिखाया था, परन्तु समापन उसने इसका उलट करके किया: ''मैं तुम से कहता हूं कि यही [चुंगी लेने वाला] मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया'' (आयत 14क, ख)। फरीसी जो ''दूसरे लोगों'' के लिए उपेक्षात्मक ढंग से बातें करता था, उसी को ''दूसरे'' की जगह नीचे कर दिया गया। आयत 14 का स्पष्ट अर्थ यह है कि फरीसी *अ*धर्मी ठहराया जाकर ''अपने घर गया।''

फरीसी मन्दिर से अपने आप में सन्तुष्ट होने की स्थिति में ही गया होगा, जिसमें वह आया था, इस बात से अनभिज्ञ होकर उसने ''प्रार्थना हीन प्रार्थना'' की थी। माइकल विल्कोक ने कहा है कि उसकी प्रार्थना ''अपने आप को शाबाशी देने से इतनी लदी हुई थी'' कि यह ''भूमि पर उतर नहीं सकती थी कि अकेली उड़कर चली जाए, जिससे परमेश्वर के कानों में पड़े।''[32] रिचर्ड ट्रैंच ने लिखा है कि धूप की सुगंधि की तरह ऊपर जाने के बजाय, फरीसी की प्रार्थना ''उसकी अपनी ही आंखों में धुआं वापस आने की तरह लगी थी।''[33]

वह अपने आप से इतना भर गया था कि परमेश्वर के लिए कोई जगह ही नहीं थी। जैसा आर. सी. एच. लैन्सकी ने कहा है, प्रभु ''भरे हुए बर्तन में कुछ डाल'' नहीं सकता है।[34] अन्त में प्रभु के सामने खड़े होने पर वह फरीसी कितना स्तब्ध हो जाएगा, ''क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा'' (आयत 14ग)!

सम्भावना नम्बर 2: चुंगी लेने वाला

उस चुंगी लेने वाले का क्या हुआ, जिसने प्रार्थना की थी कि ''हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर''? वह ''धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया'' (आयत 14)। उसके अपराध क्षमा किए जा चुके थे; उसके अधर्म दूर हो गए थे; उसके पाप धोए गए थे (भजन संहिता 51:1, 2)। ''उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है'' इतनी ही दूर उसके अपराध उससे हो गए थे (भजन संहिता 103:12)। ''फरीसी घमण्ड से भरा, खुशी-खुशी घर गया था। चुंगी लेने वाला अच्छा महसूस करते हुए, शांति से भरा घर गया था।''[35]

जी. कैम्पबैल मोरगन ने कहा है, ''मुझे लगता है कि यह आदमी अगले दिन फिर मन्दिर में आया, पर इसी तरह नहीं आया था।''[36] पहली बार वह पाप से लदा हुआ आया था जबकि अगली बार वह क्षमा तथा कृतघ्नता की भावना से भरा आया होगा। वह जिसने अपने आप को नीचे किया था, उसे ऊंचा किया गया था (लूका 18:14)।

सारांश

अब कुछ प्रश्न हो जाएं-ऐसे प्रश्न जिनका उत्तर मैं आपके लिए और आप मेरे लिए नहीं दे सकते:

- कहानी में दो व्यक्तित्व दिखाए गए हैं। इनमें से आप के व्यक्तित्व के साथ कौन सा मेल खाता है? प्रभु उन लोगों का उद्धार नहीं करता, जिन्हें लगता है कि उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं है।
- कहानी में दो प्रार्थनाएं बताई गई हैं। आपकी प्रार्थना से कौन सी प्रार्थना मेल खाती है?
- कहानी में दो सम्भावनाएं मिलती हैं: ऊंचा किया जाना या नीचा होना। अपने आप से पूछें, ''यदि मैं परमेश्वर के सामने खड़ा होऊं, इसी हाल में, तो मुझे ऊंचा किया जाएगा या नीचा?''

क्लोविस जी. चैपल ने डॉ. मेक्ल्युर की कहानी बताई है।[37] चालीस वर्ष तक यह डॉक्टर नि:स्वार्थ भाव से रोगियों की सेवा करता रहा। आखिर में थककर वह अपनी जीवन यात्रा के अन्त पर आ गया। उसने एक पुराने मित्र के पास संदेश भेजकर विनती की कि वह उसकी मां की बाइबल में से पढ़कर सुनाए। मित्र ने यूहन्ना 14 खोला, जो ऐसा वचन है जिससे कई लोगों को चैन मिला है, पर उस डॉक्टर ने उसे रोक दिया। उसने कहा, ''यह मेरे जैसे लोगों के लिए नहीं है। मैं इसके योग्य नहीं हूं। इधर ला, मैं वह वचन निकालता हूं, जिसे मैं गत माह से हर रात पढ़ता आया हूं।'' जब उस मित्र ने बाइबल उसके आगे की, तो लूका 18:13 खुल गया: ''परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीट कर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर!'' डॉक्टर ने कहा, ''यह मेरे लिए ही या किसी दूसरे ऐसे बूढ़े पापी के लिए कहा गया होगा, जो अपने जीवन के अन्त में पहुंच गया है और अपने बारे में कहने को उसके पास कोई अच्छा शब्द नहीं है।'' लूका 18:13 केवल डॉक्टर मेक्ल्युर के लिए ही नहीं लिखा गया था; यह आपके और मेरे लिए भी लिखा गया था।

कोई भी इतना भला नहीं है कि उसे परमेश्वर की दया की आवश्यकता न हो, और कोई भी इतना बुरा नहीं है कि उस पर दया न हो सकती हो। यदि आपने प्रभु के निमन्त्रण को स्वीकार नहीं किया है[38] तो अपने आप को उसकी दया के सामने फैंक दीजिए: ''हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर!''

नोट्स

आप इस प्रवचन को ''फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत'' नाम दे सकते हैं। क्लोविस जी. कैम्पबैल ने इस बाइबल पाठ पर अपने प्रवचन का नाम ''विश्वव्यापी प्रार्थना'' रखा (*सरमनज़ फ्रॉम द पैरेबल्स* में)।

टिप्पणियां

[1]कई वर्ष तक, इसे ''फरीसी और महसूल लेने वाले का दृष्टांत'' के रूप में जाना जाता था, ''महसूल लेने वाला'' को किंग जेम्स वर्ज़न में ''कर एकत्र करने वाला'' कहा गया है। इस प्रवचन में ''चुंगी लेने वाला'' और ''कर लेने वाला'' शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे के स्थान पर किया जाएगा। [2]यीशु को लूका 18:14ख की सच्चाई पर ज़ोर देना पसन्द था (देखें लूका 14:11; मत्ती 23:12)। [3]यह उदाहरण, जहां मैं रहता हूं वहां के प्रचलित वाक्यांश ''सामाजिक सीढ़ी'' पर आधारित है। यदि आपके यहां ऐसे वाक्यांश का इस्तेमाल न भी होता हो, तो भी ऊंची पदवी पर चढ़ने के विचार का इस्तेमाल किया जाए। [4]मन्दिर के निकट रहने वाले श्रद्धालु यहूदी वहां प्रार्थना करने के लिए जाते थे; बहुत दूर रहने वाले मन्दिर की ओर मुंह करके प्रार्थना करते थे। [5]कुछ लेखकों का कहना है कि प्रार्थना के लिए यह इकट्ठ दिन में चार बार होता था। ठहराए हुए समयों के अलावा, यहूदी अन्य समयों में भी जब चाहें प्रार्थना करने के लिए जा सकते थे। [6]कुछ लोगों का विचार है कि पवित्र आत्मा ने फरीसियों की दुष्टता को उजागर करने के लिए सुसमाचार के वृत्तातों के लेखकों को प्रेरणा दी, क्योंकि इन वृत्तांतों के लिखे जाने के समय (लगभग 60-65 ईस्वी), फरीसी कलीसिया के भीतर (देखें प्रेरितों 15:5) और बाहर (प्रेरितों 23:6) दोनों जगह अशांति फैलाने का मुख्य कारण थे। [7]सब फरीसियों पर यह बात लागू नहीं होती थी (देखें मत्ती 23:14), परन्तु इस फरीसी पर लागू होती होगी। [8]यीशु के अलावा किसी और ने कभी पूरी रीति से व्यवस्था का पालन नहीं किया; पर, अपने ढंग से, फरीसी कोशिश अवश्य करते थे। स्पष्टतया उनमें से कुछ का यह मानना था कि वे पूरी रीति से इसे मानते थे। [9]प्रायश्चित के दिन के सम्बन्ध में निर्देशों में अपने आपको ''दुख पहुंचाना'' बताया गया था। यहूदी लोगों का इसे करने का एक ढंग बिना भोजन के रहना (उपवास रखना) था। परमेश्वर द्वारा ठहराए गए इस दिन के अलावा, यीशु के समय तक यहूदियों ने उपवास के चार और राष्ट्रीय दिन जोड़ लिए थे। [10]बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार, मूसा सोमवार के दिन सीनै पहाड़ पर चढ़ा था और गुरुवार के दिन उतरा था।

[11]ऑस्ट्रेलिया में ''पब्लिकन'' उसे कहते हैं जो पब यानी शराब पीने का अहाता (जो बार/होटल का मेल है) चलाता है। जब मैं ऑस्ट्रेलिया में था, तो बाइबल में पब्लिकन पर चर्चा करने के समय एक आगंतुक बिफर पड़ी थी। पता चला कि उसका पति एक पब चलाता था। [12]विलियम बार्कले, *एण्ड जीज़स सेड* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1970), 101. [13]नील आर. लाइटफुट, *द पैरेबल्स ऑफ़ जीज़स,* पार्ट 2 (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 46. [14]अर्थात जिसने उन्हें शत्रु (रोमी सरकार) के हाथ बेच दिया। [15]इसीलिए लोग इतना हैरान थे कि यीशु ''महसूल लेने वालों और पापियों का मित्र'' था (मत्ती 11:19)। [16]लाइटफुट, 46. [17]यह वाक्य क्लोविस जी. चैपल, *सरमन्ज़ फ्रॉम द पैरेबल्स* (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन-कोक्सबरी प्रैस, 1933), 106 से लिया गया था। [18]मत्ती 6:7 अन्यजातियों की बात करता है, परन्तु कई टीकाकारों का मानना है कि यह अभियोग फरीसियों का है, जो इस सम्बन्ध में अन्यजातियों की नकल करते थे (देखें लूका 20:47)। [19]यदि थोड़ा हंसाना उपयुक्त हो, तो आप ''यह सुनिश्चित करने के लिए कि परमेश्वर को मालूम था कि वह किसके साथ बात कर रहा था'' जोड़ सकते हैं। [20]ग्लैन पेस, ''द यूनिवर्सल प्रेयर'' जुडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, जुडसोनिया, ऑरकैंसा, 2000 में सुनाया गया संदेश।

[21]ज्योफ़री डब्ल्यू. ब्रोमिले, सामा. संस्क., ''वूमैन,'' *द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,*

संशो. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4: 1093-94. [22]''दूसरा मील'' की शब्दावली मत्ती 5:41 से ली गई है। [23]खटमल मारने वाले एक आदमी ने मुझे बताया कि एक किस्म की लाल चींटियां एक इंच तक लम्बी होती हैं! जिस प्रजाति का मैंने उल्लेख किया है, वह मुझे बचपन की बात याद दिलाती है। [24]यह दो साधारण चींटियों का, जहां मैं रहता हूं एक अवैज्ञानिक विवरण है। (खटमल मारने वाला व्यक्ति कहता है कि छोटी काली चींटियां ''गन्धमय'' चींटियां होती हैं, परन्तु यह शब्द कठिन है।) यदि आप इस उदाहरण का इस्तेमाल करते हैं, तो आप उन चींटियों का हवाला दे सकते हैं, जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों। [25]जहां मैं रहता हूं वहां लोग आराधना में सिर झुकाकर और आंखें बन्द करके प्रार्थना करते हैं। यह अभ्यास लूका 18 के महसूल लेने वाले के उदाहरण से लिया गया हो सकता है। आंखें खोलकर प्रार्थना करना वचन के अनुसार है। मैंने कई बार (विशेषकर खतरनाक सड़क पर यात्रा करते हुए) आंखें खोलकर प्रार्थना की है; पर सिर झुकाना दीनता का संकेत है और आंखें बन्द करने से ध्यान भटकने से बचने में सहायता मिलती है। [26]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने सुझाव दिया है कि यह ''उसे परमेश्वर की मार को याद कराने'' के लिए हो सकता है ''जिसके वह योग्य था'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 537)। शायद हमें ध्यान देना चाहिए कि यह एक सांकेतिक कार्य था न कि घावों को सचमुच छेड़ना। यह उदाहरण कुछ धर्म शास्त्रियों के अपने आप को दुख पहुंचाने की शिक्षा को उचित नहीं ठहराता। देह परमेश्वर का मन्दिर है (1 कुरिन्थियों 6:19) और इसे दूषित नहीं किया जाना चाहिए। [27]प्रार्थना में यूनानी के केवल पांच शब्द हैं। [28]ग्लैन पैस ने एक स्त्री के बारे में बताया जो ''अपने पापों का अंगीकार करने'' और प्रार्थना करवाने के लिए आई। प्रचारक को बताते हुए कि वह क्यों आई है, उसने श्रोताओं में बैठी एक स्त्री की ओर इशारा किया और इतना ज़ोर से बोली कि सब तक उसकी आवाज़ पहुंच सके, ''पर सारी गलती उसी की है!'' [29]NASB वाली मेरी प्रति में ''या, *propitious*'' है। [30]इस पाठ में लोगों के प्रार्थना करने के लिए मन्दिर जाने के समयों के बारे में पहले दी गई चर्चा देखें।

[31]देखें रोमियों 7:13. [32]माइकल विल्कॉक, *द मैसेज ऑफ़ लूक: द सेवियर ऑफ़ द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस-1979), 165. [33]रिचर्ड सी. ट्रेंच, *नोट्स ऑन द पैरेबल्स ऑफ़ अवर लॉर्ड* (वैस्टवुड, न्यू जर्सी: फलैमिंग एच. रेवल कं., 1953), 503. [34]आर. सी. एच. लैंस्की, *इन्टरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट लूक'स गॉस्पल* (मिनियापुलिस: अगस्बर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1946), 906. [35]पेस. [36]जी. कैम्पबैल मॉर्गन, *द पैरेबल्स एण्ड मैटाफोर्स ऑफ़ अवर लॉर्ड* (वैस्टवुड, न्यू जर्सी: फलैमिंग एच. रेवल कं., 1942), 242. [37]मूल कहानी *बिसाइड द बोनी ब्रायर बुश* नामक पुस्तक में थी। *सरमन्स फ्रॉम द पैरेबल्स: 113-14* में चैपल का वर्ज़न। [38]आप अपने सुनने वालों को गैर मसीहियों (मरकुस 16:15, 16) और खोए हुए मसीहियों (प्रेरितों 8:22) के लिए परमेश्वर की शर्तें बता सकते हैं।